(बी.ए.ऑनर्स) संस्कृत कार्यक्रम

सत्रीय कार्य
(जनवरी–2023 तथा जुलाई–2023 सत्र के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : **BSKC–106**
काव्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

बी.ए. (ऑनर्स) संस्कृत–कोर पाठ्यक्रम

सत्रीय कार्य (2023–23)

पाठ्यक्रमकोड : **BAG/BSKC-106/2023 - 23**

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्यशिक्षकजाँच सत्रीय कार्य (**TMA**) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्यकाम का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकतेहैं। यहाँ पाठ्यसामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिए।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या औरअपने अध्ययन केन्द्रकाउल्लेख करेंजैसाआगेदिखायागयाहै ।

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

पाठ्यक्रमकानाम/कोड : .....

सत्रीय कार्यकोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

दिनाँक : .....

<u>सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि</u>

जनवरी 2023 सत्र के लिए : 30 अप्रैल, 2023

जुलाई 2023 सत्र के लिए : 31 अक्टूबर, 2023

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. **अध्ययन** :सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास** : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्वनोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणी परक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए।उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

(क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

(ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

(ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति**: जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तरपुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट : याद रखें कि विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य : BSKC- 106 काव्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना

पाठ्यक्रमकोड–BSKC-106
पाठ्यक्रमशीर्षक– काव्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना
सत्रीय कार्य–BSKC – 106/TMA/2023-2023

पूर्णांक– 100

नोट–सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : –

1. काव्य के भेद – दृश्यकाव्य रूपक तथा श्रव्यकाव्य का विवेचन कीजिए ? (20)

अथवा

काव्य के उद्‌भव और विकास को स्पष्ट कीजिए ?

2. व्यंजना शब्दशक्ति का निरुपण कीजिए ? (20)

अथवा

लक्षण शब्दशक्ति का निरुपण कीजिए

3. साहित्य शास्त्र अथवा अलंकार शास्त्र पर टिप्पणी लिखिए ? (10)
4. काव्य लक्षण अथवा काव्य हेतु का विवेचन करें ? (10)
5. भरत के रससूत्र की व्याख्या कीजिए ? (10)

अथवा

रस की अलौकिता को स्पष्ट कीजिए ?

6. अनुप्रास अथवा यमक का लक्षण एवं उदाहरण को स्पष्ट कीजिए ? (7.5)
7. अधोलिखित श्लोक में कौन सा अलंकार है लक्षण लिखकर स्पष्ट कीजिए ? (7.5)

शङ्काकरनरकपालं परिजनो
विशीर्णाङ्गो भृङ्गी वसु च बृष एको बहुवयाः।
अवस्थेयं स्थाणोरपि भवति सर्वामरगुरो
र्विधौ वक्रे मूर्ध्नि स्थितवति वयं के पुनरमी।।

अथवा

स्वप्नेषु समरेषु त्वां विजयश्रीर्न मुञ्चति।
प्रभावप्रभवं कान्तं स्वाधीनपतिका यथा।।

8. अनुष्टुप् अथवा मन्दाक्रान्ता का लक्षण लिखकर उदाहरण को स्पष्ट कीजिए ? (7.5)

9. अधोलिखित श्लोक में कौन सा छन्द है लक्षण लिखकर स्पष्ट कीजिए ? (7.5)

आ परितोषाद्विदुषां
न साधु मन्ये प्रयोग विज्ञानम्।
बलवदपि शिक्षिताना–
मात्मन्यप्रत्ययं चेतः

अथवा

''सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं,
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।''